पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शनः एक परिचय

डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
मॉडर्न कालेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज
मोहननगर, गाजियाबाद, उ0प0।
Email : dheerajsingh07@gmail.com

सारांश

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति में पं0 दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे राजनेता के रूप में जाने जाते हैं जिन्होनें मूल्य खो रही राजनीति में पुनः शुचिता, आदर्श एवं मूल्यों को स्थापित किया। 25 सितम्बर 1916 ई0 को जन्में पं0 उपध्याय एक कुशल संगठनकर्ता, विचारक दार्शनिक, प्रखर वक्ता, अर्थवेत्ता, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट् सेवा हेतु समर्पित कर दिया । भारतीय राजनीति के वे ऐसे राजनेता थे जिन्होने देश को एक सशक्त विपक्ष दिया और विपक्ष की भूमिका को महत्व दिलाया ।

पं0 उपाध्याय प्राचीन भारतीय दर्शन की पुर्नव्यारव्या करते हुए समाज को समता समानता एंव सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का नवीन मार्ग दिया और एक दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे एकात्म मानव दर्शन के नाम से जाना जाता है। एकात्म मानव दर्शन आर्थिक सामाजिक, शैक्षिक एवं राजकीय सिद्वान्तों आदि कासंकलन है जिसमें विश्व प्रकृति, समाज, व्यक्ति सभी पर सामन्जस्यपूर्ण, समरस कल्याणकारी जीवन व व्यवस्थापन हेतु विचार प्रस्तुत किया है। वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्र ही नही वरन् सम्पूर्ण विश्व में मानवता मूलक समाज की स्थापना के लिए एकात्म मानव दर्शन पूर्णतः प्रासांगिक है एवं भविष्य में भी इसकी प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी ।

मुख्य शब्द–*पं0 पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानव दर्शन, धर्म, भारतीय जीवन दर्शन, चार पुरूषार्थ, मन, बुद्धि, आत्मा, व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र।*

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति में एक नाम ऐसा उभर कर आता हैं जिसने भारतीय राजनीति में समाप्त हो रही शुचिता, नैतिकता, उत्तरदायित्व बोध, निःस्वार्थ परसेवा भाव, निष्पक्षता जैसे आदि मूल्यों, को पुर्नस्थापित करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन भर प्रयासरत रहे। वे हैं पं0 पंडित दीनदयाल उपाध्याय जिनका जन्म 25 सितम्बर 1916 ई0 में मथुरा के एक छोटे से ग्राम चन्द्र भान नगला में हुआ। अपने जीवन की विसंगतियों से संघर्ष करते हुए अपूर्व मेधा के धनी पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने मूल्य आधारित राजनीति करते हुए भारतीय राष्ट्रीय

राजनीति में विपक्ष के सबसे बड़े नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। भारतीय राजनीति में उन्हें एक राष्ट्रवादी विचारक, कुशल संगठन कर्ता, प्रखर वक्ता, दार्शनिक, चिन्तक, अर्थवेत्ता, निपुण राजनेता, संवेदनशील व्यक्ति के रूप में याद किया जाता हैं। उन्हें एक ऐसे प्रभावशाली राजनेता के रूप में जाना जाता हैं जिन्होने राष्ट्रहित और राष्ट्रविकास को सर्वोपरि मानते हुए समस्त भौतिक सुख–सुविधाओं, पद, परिवार एवं निजता का परित्याग कर दिया एवं अपना सम्पूण जीवन राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया। इस युगपुरूष स्वप्न दृष्टा ने एक ऐसे सहअस्तित्व, भाईचारा मूल्य आधारित विकसित राष्ट्र का स्वप्न देखा जहां आर्थिक समानता हो, सामाजिक लोकतंत्र हो और सभी का विकास हो, सभी को सम्मान मिले, सभी रोजगार युक्त हों, सभी का जीवन गरिमापूर्ण हो एवं सभी का अस्तित्व सुरक्षित हो।

पंडित जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित करते हुए समाज को समता, समानता एवं सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का एक नवीन मार्ग दिया और एक दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे एकात्म मानव दर्शन के नाम से जाना जाता हैं। वे एक ऐसे राजनेता थे जिन्होंनें सम्पूर्ण राष्ट्र, समाज एवं भारतीय जनों की समस्याओं को बहुत करीब से जाना एवं अनुभूत किया। भारतीय व पाश्चात्य ग्रंथों का अध्ययन एवं स्वयं के मौलिक चिंतन द्वारा उन्होंने राष्ट्र एवं समाज के भावी युगानुकूल स्वरूप हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये। उनके इस मौलिक चिंतन जिसमें आर्थिक, समाजिक, शैक्षिक एवं राजकीय सिद्धांतों का संकलन था, देश के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ''उनके इन्हीं मौलिक मानवीयता मूलक विचारों को एकात्म मानव दर्शन कहा गया। पं0 दीन दयाल द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद दर्शन चिंतन जगत को विशिष्ट देन हैं''।[1]

समस्या कथन–''पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शनः एक परिचय।''

समस्या का उद्देश्य–प्रस्तुत शोध समस्या का उद्देश्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन से सभी को परिचत कराना एवं इस संदर्भ में उनके विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना हैं।

शोध विधि–प्रस्तुत शोध समस्या में ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य–

पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने भारत में एक आदर्श राज्य की कल्पना की। अपनी इस कल्पना को साकार करने के लिए ही उन्होंने एकात्म मानव दर्शन की रचना की। नानाजी देशमुख के शब्दों में–''स्वतंत्र भारत को मानवीयता का अग्रदूत, वैभव से विभूषित और आध्यमिकता का पुजारी बनाने के लिये स्व0 पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानव दर्शन की रचना की थी।''[2] स्वतंत्रता के पश्चात देश उन मूल्यों और आदर्शों को प्राप्त करने में असफल रहा जिनकी कल्पना राष्ट्र नियंताओं ने स्वतंत्रता के पूर्व की थी। देश को दिशाहीनता की इस स्थिति से निकालने एवं उसका मार्ग दर्शन हेतु पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानव दर्शन की कल्पना की। भयमुक्त, समतामूलक, लोकतांत्रिक एवं मानवीयता मूलक समाज की रचना करना उनके एकात्म मानव दर्शन का उद्देश्य था।

व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र का अभिन्न अंग हैं लेकिन राजनीतिक व्यवस्थायें व विभिन्न दार्शनिक व्याख्यायें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व व प्रकृति सभी में अंतर्विरोध उत्पन्न करने का कार्य करती हैं। यह अंतर्विरोध व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के विकास में बाधक बनता हैं। जिनके परिणामस्वरूप समाज में, राष्ट्र में व विश्व में चारों ओर अंशाति व परस्पर संघर्ष का वातावरण बना रहता हैं। पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी ने एक ऐसे दर्शन की आवश्यकता को महसूस किया जिसमें विश्व में व्याप्त विविधता के स्थान पर उनके मध्य उपस्थित एकात्मकता पर विचार किया जाये। उन्होंने इसी व्याप्त एकात्मकता को आधार मानते हुए एकात्म मानव दर्शन का प्रणयन किया। एकात्म मानव दर्शन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना था जहां समाज में अंतर्विरोध के स्थान पर परस्पर सद्भाव एवं प्रेमपूर्ण वातावरण हो, सह अस्तित्व, सभी को सम्मान जहां का मूलभाव हो, आर्थिक व सामाजिक स्तर पर सच्चे अर्थो में लोकतंत्र स्थापित हों, जहां ग्राम व नगर सभी साधन व शक्ति सम्पन्न हो, सभी को स्वास्थ्य व शिक्षा की सुविधा उपलब्ध हों तथा जहां कृषि को निकृष्ट कार्य न समझ कर एक सम्मानित कार्य एवं कषक को बेचारा न समझकर देश का अन्नदाता माना जाये।

एकात्म मानव दर्शनः एक परिचय

''भारतवर्ष अपनी महान सभ्यता एवं संस्कृति के कारण विश्व मंच पर सदैव प्रसिद्ध रहा हैं एवं अपनी गरिमामयी आभा रश्मियों से विश्व मंच को प्रति पल आलोकित करता रहा हैं। समय–2 पर अनेक महान विभूतियां ने भारतवर्ष में अवतरित होकर यहां की महान परम्परा को समृद्ध किया। इन महान विभूतियों द्धारा स्थापित महान परम्पराओं ने समय–समय पर समाज व राष्ट्र का पथ प्रदर्शन किया। ''[3] ऐसी ही एक महान विभूति का अवतरण 25 सितम्बर 1916 ई0 में हुआ जिसेसम्पूर्ण राष्ट्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम से जानते हैं। उन्होंने नवोदित स्वतंत्र राष्ट्र भारत जो लम्बी गुलामी के कारण अपने प्राचीन, संस्कारों, मूल्यों एवं आदर्शों को खो बैठा था, के पथ प्रदर्शन हेतु प्राचीन भारतीय मूल्यों पर आधारित एक दर्शन का प्रणयन किया जिसे चिंतन जगत में एकात्म मानवदर्शन कहा गया।

''एकात्म मानव दर्शन का अर्थ हैं मानव–जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के एकात्म सम्बंधो का दर्शन। यद्यपि यह सच हैं कि मानव–जीवन के विविध आंगोपांगो तथा मानव प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में विविधता होती हैं, किन्तु यह विविधता आंतरिक एकता के ही विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति हुआ करती हैं। इसीलिए इन सब में पारस्परिक अनुकूलता और पूरकता होती हैं। एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति जीवन का भी उसके सभी अंगों का ध्यान में रखते हुए संकलित विचार करता हैं। मनुष्य प्राणी शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकलित रूप हैं। इसीलिए मानव का सर्वागींण विकास उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा सबका संकलित विचार हैं।''[4]

जनसंघ के स्थापक डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी की श्री नगर जेल में 23 जून 1953 में संदिग्ध अवस्था में मृत्यु के बाद पं0 दीनदयाल उपायध्याय ने बहुत विषम परिस्थितयों में 16 वर्षों के अथक परिश्रम कर अकेले ही जनसंघ को भारतीय राजनीति में एक सशक्त विपक्ष में रूप में स्थापित किया। अपने सम्पूर्ण 'स्व' कर परित्याग कर एवं अपना सम्पूर्ण जीवन संगठन एवं राष्ट्र

के लिए समर्पित कर दिया। 11 फरवरी 1968ई0 में मात्र 52 वर्ष की अवस्था में उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी किन्तु अपने पीछे वे इतना छोड़ गये कि इस देश के राष्ट्रवादी उनके ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकेगें। जिस राष्ट्रवादी राजनैतिक संगठन के पौधे को उन्होंने सींच कर आगे बढ़ाया आज वह भारतीय जनता पार्टी के रूप में हमारे समक्ष हैं। उनके द्धारा जो विचार दिये गये वे सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक धरोहर या वैचारिक सम्पदा हैं। उनकी समस्त वैचारिक सम्पदा ही एकात्म मानव दर्शन के रूप में जानी जाती हैं।'' मूलतः यह भारतीय संस्कृति, विचार और दर्शन का निचोड़ हैं। जिस समय पूरा विश्व पूंजीवाद और साम्यवाद की अच्छाई–बुराई की बहस में उलझा था, पं0 दीन दयाल उपाध्याय ने हस्तक्षेप करते हुए उनके चरम विचारधाराओं से इतर एकात्म मानववाद की सम्यक अवधारणा दी।'' [5]

''वास्तव में देखा जाये तो उनका राजनीतिक कृतित्व और उल्लेखनीय सफलता इस दूसरे पहलू की ही एक अभिव्यक्ति हैं। वह पहलू यह कि पंडित जी एक जन्मजात प्रतिभासम्पन्न और मूलगामी चिंतक थे। उनका चिंतन न केवल व्यक्ति जीवन से लेकर सम्पूर्ण मानव जाति तक का चिंतन हैं, अपितु मानवेत्तर प्रकृति और उससे भी आगे परमेष्टि तक सबकी रचनात्मक दृष्टि से और समग्र रूप से टोह लेने वाला चिंतन हैं। एकात्म मानव दर्शन उनके मूलगामी रचनात्मक चिंतन की ही अनमोल निष्पत्ति हैं।'' [6]

पंडित जी के एकात्मवादी दर्शन में व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के मध्य संतुलित समन्वय की व्याख्या प्रस्तुत की गई हैं। एकात्म मानवदर्शन के संबंध में दीनदयाल शोध संस्थान के संस्थापक समाज सेवी नानाजी देशमुख का कथन उल्लेखनीय हैं। उनके अनुसार–''एकात्म मानव दर्शन भारतीय जीवन दर्शन का ही नया नामकरण माना जा सकता हैं। भारतीय जीवन दर्शन मानव–मानव में भेद नहीं करता। अन्यथा चराचर में आत्मतत्व अनुभव करने की सम्भावना ही नहीं होती। वह हर एक नागरिक को मानव मानकर ही व्यवहार करता हैं। किसी से भी उसकी उपासना पद्धति, भाषा, क्षेत्रीयता, जातीयता या ऊॅचनीच के आधार पर भेदभाव को अमानवीय मानता हैं।''[7] भगवतगीता का भी यही निहितार्थ हैं। मानव–मानव ही नहीं अपितु चराचर जगत में सभी प्राणियों में भगवतगीता कोई भेद नहीं करती। चराचर जगत में व्याप्त यहीं एकात्मकता भारतीय संस्कृति का मूल हैं।

एकात्म मानव दर्शन के मूल में व्यक्ति हैं। इस दर्शन में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र एवं इसके पश्चात सम्पूर्ण मानवता एवं चराचर सृष्टि पर विचार किया गया हैं। एकात्म मानव दर्शन उपरोक्त सभी इकाइयों में अंतर्निहित परस्पर पूरक संबंधों को स्पष्ट करते हुए उन पर विचार करता हैं। भारतीय चिंतन जगत में सृष्टि एवं समष्टि को एक पूर्ण के रूप में देखा जाता हैं। पंडित जी ने भी मानव, समाज एवं प्रकृति व उनके सम्बन्धों को भी समग्र रूप में देखा। उन्होंने अपने दर्शन में मानव को तन–मन–बुद्धि एवं आत्मा का सम्मिलित रूप माना। उनके अनुसार–'' मनुष्य मन, बुद्धि, आत्मा तथा शरीर इन चारों का समुच्चय हैं। हम उसको टुकड़ों में बांट कर विचार नहीं कर सकते हैं।''[8] मानव की यहीं समग्रता या पूर्णता उसे समाज के लिए उपयुक्त एवं उपादेय बनाती हैं। भारतीय चिंतको एवं विचारकों द्धारा प्रतिपादित धर्म,

अर्थ, काम एवं मोक्ष का विचार भी एकात्म मानव दर्शन में समाविष्ट हैं। एक पूर्ण मनुष्य को निर्मित करने वाले इन चारतत्वों में एकात्मकता आवश्यक है, क्योंकि यहीं एकात्मकता मनुष्य को कर्मठता की ओर प्रेरित कर उद्यमी बनाती है और इसी से समाज का विकास, कल्याण व हित संवर्द्धन सम्भव हो पाता हैं।

''एकात्म मानववाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मार्गदर्शक दर्शन हैं। यह दर्शन पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 22 से 25 अप्रैल, 1965 को मुम्बई में दिये चार व्याख्यानों के रूप में प्रस्तुत किया गया था।''[9]

एकात्म मानव दर्शन एक ऐसी अवधारणा हैं जिसको सर्पिल आकार की मण्डलाकृतियों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं जिसके केन्द्र में व्यक्ति होता हैं, व्यक्ति को घेरे हुए अगली सर्पिल आकृति परिवार, परिवार को घेरे हुए अगली सर्पिल आकृति समाज। इस प्रकार उसके बाद राष्ट्र, फिर विश्व या समष्टि और अंत में परमेष्टि या अनंत ब्रह्मांड को अपने में समाहित किये हुए हैं।

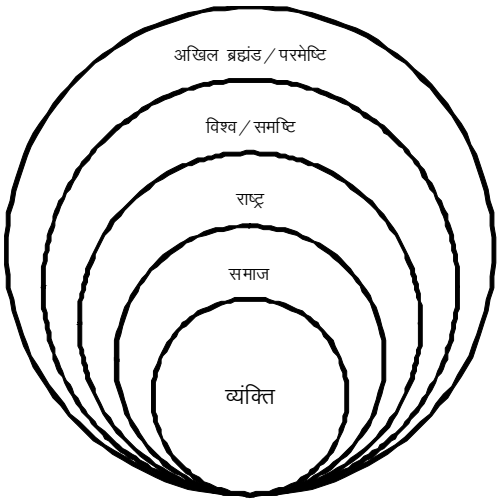

विकास का यहीं क्रमिक आधार हैं। एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे–––––सभी एक दूसरे से परस्पर जुड़कर क्रमिक रूप से विकसित होते हैं और अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखते हुए, एवं साधते हुए एक दूसरे के पूरक व स्वाभाविक सहयोगी के रूप में स्थापित होते हैं। इनमें परस्परकोई संघर्ष नहीं हैं। ''इस एकात्म मानव दर्शन में व्यष्टि से समष्टि तक सब एक ही सूत्र में गुंफित हैं। व्यक्ति का विकास होगा तो समाज विकसित होगा, समाज विकसित होगा तो राष्ट्र की उन्नति होगी, राष्ट्र की उन्नति से विश्व का कल्याण होगा, इस सूत्र को पंडित दीनदयाल जी ने श्रीमद भागवद से ग्रहण किया था जिसकी मूल धारणा 'Struggle for existence' नहीं बल्कि अस्तित्व के लिए सहयोग हैं।''[10]

पंडित जी का मानना हैं कि मानव समाज का अस्तित्व प्रकृति के सहयोग के बिना सुरक्षित नहीं हो सकता। जीवन का मंत्र 'Servival of the fitest' नहीं हो सकता अपितु सभी का

अस्तित्व/सहअस्तित्व, सबका सहयोग एवं सबका विकास जीवन का मूल मंत्र हैं। हम अपना अस्तित्व प्रकृति के सहयोग के बिना सुरक्षित नहीं रख सकते। प्रकृति एवं मानव जीवन में ये एकात्मकता सदैव रहेगी।एकात्म मानव दर्शन की जड़े प्राचीन भारतीय दर्शन में ही निहित हैं।''सही मायने में एकात्म मानव दर्शन का प्रतिपादन कर दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत से भारत का परिचय कराने की कोशिश की।''[11]

''एकात्म मानव दर्शन प्रत्येक राष्ट्र को अपनी–अपनी और प्रकृति के अनुसार विकास करने की स्वतंत्रता देता हैं। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण, कर्म के अनुसार विकास कर विकास का फल समाज को अर्पित करता हैं, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र अपने को मानवता का एक अंग समझे। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र स्वायत्र रहते हुए अपना विकास भी करेगा किन्तु विश्वात्मा का भाव रहने के कारण एक दूसरे का पोषक, सम्पूर्ण मानवता का पोषक भी बन सकेगा। यही हैं पं0 दीनदयाल जी के एकात्म मानव वाद का व्यवहारिक रूप। भारत की प्राचीन अवधारणा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' एवं सर्वेभवन्तु सुखिनः'' का ही दूसरा रूप हैं।''[12]

''एकात्म मानव दर्शन के परिवेश में कहना हो तो यह लक्ष्य व्यक्ति के साथ–साथ सारे मानव–समुदाय और मानवेत्तर संसार दोनो के एकात्म जीवन के विकास के लिए पोषक होना चाहिए। वैसा वह हैं भी। धर्म के प्रति अवरोधी भौतिक सुखों के साथ–साथ आध्यात्मिक सुखों की अनुभूति, इस दर्शन में निहित मानव के व्यक्तिगत स्तर का लक्ष्य हैं और व्यक्ति के ममत्व भरे व्यवहार की परिधि को 'अहम' से लेकर 'वयम' की दिशा में बढ़ाते हुए विश्व मानव तक और उससे भी आगे जड़–चेतन संसार को व्याप्त करके अंततः परमेष्टि तक पहुंचाना ही समष्टि की दृष्टि से विचार और आचार का परम लक्ष्य हैं।''[13]

एकात्म मानव दर्शन का महत्वपूर्ण अंग भौतिक विकास के साथ ही आध्यात्मिक उन्नति भी हैं। ''एकात्म मानव दर्शन का व्यक्तिगत स्तर पर जो लक्ष्य हैं वह समष्टि स्तर के लक्ष्य से स्वतंत्र या भिन्न न होकर एक ही जीवन–पट का ताना–बाना हैं।''[14] अध्यात्मिक उन्नति का आशय–अपने मूल मात्र या स्वरूप अर्थात सर्वव्यापी परम् तत्व/सत्य का अधिकाधिक बोध होते जाना। इस प्रकार जब व्यक्ति को अपने मूल स्वरूप का बोध होने लगता हैं अर्थात उसे यह बोध होने लगता हें कि जिस परमात्मा का वह अंश हैं उसी का अंश अन्य सभी प्राणियों में भी हैं वह धीरे–धीरे प्रत्येक प्राणी में ईश्वर देखने की अवस्था मन को प्राप्त होने लगती हैं। उसे यह बोध हो जाता हैं कि समाज उसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर का चलता–फिरता रूप हैं और उस समाज या प्राणी जगत की सेवा ही परमेश्वर की पूजा हैं, और अंत में यही धारणा उसके मन में पक्की हो जा जाती हैं। यह स्थिति ही आाध्यात्मिक उन्नति की स्थिति हैं।

एकात्म मानव दर्शन के अनुसार मनुष्य के शरीर की धारणा और विकास जितना आवश्यक हैं उतना ही आवश्यक उसके मन, बुद्धि और आत्मा का विकास भी हैं। इनके समुचित विकास के बिना उसके सर्वागीण व संतुलित विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं। मनुष्य शरीर मात्र नहीं हैं। उसके शरीर के साथ उसके मन, बुद्धि और आत्मा भी हैं। केवल शारीरिक या भौतिक सुखों को प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य नहीं होना चाहिए उसके साथ–साथ

मन, बुद्धि व आत्मा के सुख पर भी विचार करना चाहिए व उनको प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। शारीरिक सुखों यथा आहार, निद्रा, कामपूर्ति आदि की अनुभूति मनुष्यों एवं पशुओं में समान होती हैं किन्तु उनमें मुख्य अंतर यहीं है कि मनुष्य के समक्ष इन सुखों के अतिरिक्त कुछ अन्य उच्च जीवन लक्ष्य भी होते हैं जो उसे मन, बुद्धि और आत्मा का सुख प्रदान करते हैं। ''जीवन का लक्ष्य उदात्त और व्यापक हो तो शरीर मन, बुद्धि आदि के सारे व्यवहार जीवन के सर्वागीण तथा एकात्म विकास के लिए पोषक सिद्ध होगें। इसके विपरीत यदि जीवन का लक्ष्य एकांगी हो, अपने और अपने परिवार का अधिकाधिक भौतिक सुख प्राप्त करने तक ही सीमित हो, तो शरीर, मन, बुद्धि की सभी शक्तियां उसी दिशा में कार्यरत होगी और जीवन का सारा संतुलन ही समाप्त हो जायेगा।''[15] इसलिए एकात्म दर्शन भौतिक उन्नति के साथ–साथ अध्यात्मिक उन्नति एवं सर्वागीण संतुलित विकास को अनिवार्य मानता हैं।

मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा की सभी प्रकार की क्षुधाएं तृप्त हो एवं उसका सर्वागीण, सर्वोत्कृष्ट एवं संतुलित विकास हो सके इसके लिए हमारी भारतीय संस्कृति में चार पुरूषार्थ की कल्पना की गई हैं जो एक संतुलित जीवन का आधार हैं। वे चार पुरूषार्थ हैं– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। भारतीय संस्कृति के ये चारों पुरूषार्थ आपस में जुड़े हुए होते हैं। एक मनुष्य के जीवन में इन चारों का महत्व समान रूप से होता हैं। इन चारों पुरूषार्थो से युक्त पूर्ण मनुष्य ही एकात्म मानव दर्शन का केन्द्र बिन्दु हैं। पं0 दीनदयाल जी के शब्दों में –''इन चतुर्विध पुरूषार्थों से युक्त मानव ही हमारी आराधना का निकष और साधन हैं। आदर्श पूर्ण मानव का यह चित्र हमारे मन में सुस्पष्ट एवं पक्का चित्रित हो तो फिर एकात्म मानव की दिशा में होने वाला उसका मार्गक्रमण ठीक से ध्यान में आना सरल हो जायेगा।''

परिवार हमारे समाज की प्राथमिक इकाई हैं। परिवार ही व्यक्ति को समष्टि जीवन का पहला पाठ देने वाली संस्था हैं। परिवार में पल–बढ़ कर व्यक्ति में आपस में स्नेह, एक दूसरे का सम्मान, एक दूसरे के लिए कष्ट सहने व उठाने की प्रवृत्ति, सहनशीलता, सहयोग आदि जैसे कई आवश्यक सद्गुणों का विकास स्वाभाविक रूप से हो जाता है। उसे ये संस्कार सचेतन प्रयास द्वारा सीखने नहीं पड़ते बल्कि स्वाभाविक रूप से उसमें इसका विकास होता रहता हैं। परिवार संस्था की इस कल्पना को अधिकाधिक व्यापक व विशाल करते हुए समाज व्यापी फिर राष्ट्र व्यापी और ''विश्वव्यापी बनाना ही आत्मिक विकास की दिशा हैं और यही एकात्म मानव दर्शन की भी केन्द्रीय कल्पना हैं।''[16]

निष्कर्ष

दीनदयाल उपाध्याय जी का एकात्म मानव दर्शन प्राचीन भारतीय संस्कृति की अवधारणा ***''वसुधैव कुटुम्बकम''*** एवं ***''सर्वे भवन्तु सुखिनः''*** का दूसरा रूप हैं। पंडित दीनदयाल का वैचारिक चिंतन शाश्वत विचारधारा से जुडता हैं। इनके आधार पर वे राष्ट्र भाव को समझने का प्रयास करते हैं। मानव जीवन की सुसंगता व सामंजस्य मानव समूह, राष्ट्र और सृष्टि के साथ कैसे स्थापित होगा, जीवन से दुख, अभाव, शोषण, विषमता आदि को हटाकर सुख, समृद्धि, सामजस्य, सेवाभाव, समता, समानता लाने वाली नीतियां क्या होगी? एक कल्याणकारी

राज्य की स्थापना किस प्रकार हो सकती हैं? युगानुकूल सामाजिक पुर्नरचना कैसे सम्भव हो सकती हैं ? जैसे सारे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास हैं–एकात्म मानव दर्शन। एकात्म मानव दर्शन एक ऐसा दर्शन हैं जो हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा से जुड़ा हुआ हैं जिसके केंद्र में केवल व्यक्ति या सत्ता नहीं बल्कि व्यक्ति, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों का बराबर महत्व हैं। प्रत्येक प्राणी में आत्मा का निवास होता हैं और यह उसी परमात्मा का अंश हैं। इसीलिए प्राणी–प्राणी में विभेद नहीं हो सकता हैं। समरसता ही मूल हैं। यही एकात्म दर्शन हैं।

पाश्चात्य दर्शन जगत का अधिकांश चितन उपभोगवाद पर आधारित हैं जिसके मूल में व्यक्ति एवं भौतिक विकास हैं। व्यक्ति को अपने लिए अधिकतम सुख–सुविधाएं एवं संसाधन जुटाने एवं उसके लिए सतत् प्रयासरत रहने का अधिकार हैं। इसी विचार का अनुकरण करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का निर्दयतापूर्वक बेहिसाब अंधाधुंध दोहन किया गया। बहुत सी वैज्ञानिक खोंजें हुई जिन्होने मानव जीवन को सरल व सुविधादायक बनाया, भौतिक विकास भी बहुत हुआ किन्तु प्रकृति विनाश के कगार पर पहुंच गई। अब प्राकृतिक संसाधनो एवं प्रकृति को बचाने के लिए समस्त विश्व प्रयासरत हैं। एकात्म मानव दर्शन प्रकृति व प्राणियों को परस्पर पूरक मानता हैं एवं प्रकृति में ईश्वर के दर्शन करता है। यह दर्शन उनके सहअस्तित्व में विश्वास करता हैं। यह भौतिक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास को भी आवश्यक मानता हैं।

नवस्वतंत्र भारत में कांग्रेस पार्टी अपार बहुमत के साथ एक नवीन ऊर्जा, उसाह एवं विश्वास के साथ शासन व्यवस्था संचालन में संलग्न हो गई। उस नव स्थापित व्यवस्था व परिस्थिति में विपक्ष की भूमिका नगण्य होते हुए भी पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने जनसंघ के रूप में एक सशक्त विपक्ष व वैचारिक चिंतन जगत को 'एकात्म मानव दर्शन' दिया किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों में उनकी नीतियां व वैचारिक दर्शन को महत्व नहीं दिया गया जिसका परिणाम यह हैं कि आज राष्ट्र विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा हैं। यदि समय रहते राष्ट्र में उनकी नीतियों और दर्शन का अनुकरण किया गया होता तो राष्ट्र की छवि कुछ और होती। राष्ट्र ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में मानवता मूलक समाज की स्थापना के लिए एकात्म मानव दर्शन सदैव प्रासंगिक रहेगा।

सन्दर्भ

1. सिंह धीरज, *दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन,* आराधना प्रकाशन कानपुर,पृष्ठ संख्या–**107**
2. ग्रामोदय स्मारक में नाना जी देशमुख द्वारा लिखा पत्र
3. सिंह धीरज, *दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन,* आराधना प्रकाशन कानपुर, पृष्ठ संख्या–**100**
4. नेने, विनायक वासुदेव, *पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन,* खण्ड–2 एकात्म मानव दर्शन, नई दिल्ली, सुरूचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1990,पृष्ठ संख्या–**11–12**
5. http://www.prabhatkhabar.comanupamtrivedi

6. नेने विनायक वासुदेव, *पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन,* खण्ड–2 एकात्म मानव दर्शन, नई दिल्ली सुरूचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1990, पृष्ठ संख्या–**9**
7. देशमुख नानाजी, *नाना जी की पाती युवाओं के नाम,* पृष्ठ संख्या–**41**
8. http:// vskbharat.com- *एकात्म मानव दर्शन* –पंडित दीनदयाल उपाध्याय
9. http://hi.wikipedia.org/wiki
10. Malviya, Dr. Saurabh *एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय,* http:// hindimedia.in
11. http://hindimedia.in *दीनदयाल होने का मतलब*
12. deendayalupadhaya.org/home.html
13. नेने, विनायक वासुदेव, *पं0 दीनदयाल विचार दर्शन* खण्ड–2 एकात्म मानव दर्शन सुरूचि प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–1990, पृष्ठ संख्या–**35**
14. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–**36**
15. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–**53**
16. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–**57**